रिकॉर्ड :– मरना तेरी गली में..... ॐ पिताश्री 28/8/62

ओऽम् शान्ति। बच्चे जा(नते हैं) कि अब हमारा मरजीवा जन्म है। जीते जी मरकर फिर उस श्रीमत पर चलना है। बच्चों को समझाया गया है कि यह है प्रवृत्तिमार्ग। भारत में पवित्र प्रवृत्तिमार्ग था और अब कलियुग के अन्त में अपवित्र प्रवृत्तिमार्ग है, जिसको फिर पवित्र प्रवृत्तिमार्ग बनना है। वो होता ही सतयुग में है। तो बाप बच्चों को समझाते हैं कि अपवित्र से पवित्र, पतित से पावन बनना है। कलियुग है पतित, सतयुग है पावन। प्रवृत्तिमार्ग में मेल–फिमेल दोनों को पवित्र बनना, यह सिर्फ संगमयुग पर ही हो सकता है; क्योंकि अभी हम पवित्र प्रवृत्तिमार्ग की दुनिया के (मालिक) बनते हैं। सन्यासी धर्म को तो 1500 वर्ष हुए। वे कोई इसलिए नहीं आते कि अपवित्र प्रवृत्ति को पवित्र प्रवृत्ति बनावें। वो तो सन्यास है ही निवृत्तिमार्ग का। वे प्रवृत्तिमार्ग का रिनाउंस करते हैं। हमको प्रवृत्तिमार्ग को रिनाउंस नहीं करना है, मरजीवा बनना है। बाकी रचना जो रची है उसकी संभाल तो ज़रूर करनी है। अपवित्र प्रवृत्तिमार्ग में रहते हुए फिर प्रवृत्तिमार्ग को ही पवित्र बनाना है, जिस पर ही झगड़ा चलता है। वो सन्यासी लोग रिनाउंस कर जाते हैं फिर गवर्मेन्ट क्या कर सकती! न स्त्री विख माँग सकती, न वो दूसरी शादी करती है। ऐसे सन्यासी तो बहुत निकले हैं। जवान अथवा छोटे बच्चे भी सन्यास करते हैं। तो वो पास्ट के संस्कार कहेंगे जो छोटेपन से ही सन्यास में चले जाते हैं। हमको यह संस्कार नहीं डाले जाते। यहाँ तो समझाया जाता है कि गृहस्थ व्यवहार में रहना है जनक मिसल। यह है अन्तिम जन्म। अगर अपवित्र प्रवृत्ति को पवित्र बनाना है तो संगम ज़रूर चाहिए। अपवित्र सृष्टि को ही बदलना है। नरक को अपवित्र, स्वर्ग को पवित्र कहा जाता है। यह हैल, वो हेविन। सूक्ष्मवतन में तो नरक–स्वर्ग की बात नहीं है। स्थूलवतन की ही बात है। हिस्ट्री भी ऐसे बताती है। जब नई सृष्टि (थी)

तो पवित्र देवताओं का राज्य था। तो ज़रूर पतित दुनिया में आकर वो पवित्र दुनिया स्थापन की होगी। ऐसे नहीं (वो) पवित्र दुनिया में आकर पवित्र दुनिया स्थापन करेंगे। क्रिश्चियन धर्म यदि पहले से ही हो तो फिर क्राइस्ट आकर क्रिश्चियन धर्म थोड़े ही स्थापन करे। तो वो पवित्र सृष्टि थी। यथा राजा तथा प्रजा। तो ज़रूर पहले कोई ने स्थापना की है जो फिर वृद्धि को पाते हैं। पहले है 108 की माला। तो समझना चाहिए पहले2 अवश्य 108 राजाएँ होते हैं जो अच्छी रीति परीक्षा में पास होते हैं। फिर राजाओं की वृद्धि होती है। प्रिंस–प्रिंसेज़ सतयुग–त्रेता में 108 तो नहीं हो सकते ना। उन्हों की माला फिर 16108 (की) दिखलाते हैं। फिर प्रजा भी वृद्धि को पाती है। यह भी समझना चाहिए कि 8 व 108 बनने वाले ज़रूर कोई बहुत तीखे होंगे। अपने पास जो गुप्त गोपिकाएँ हैं वे भी बहुत हैं, जो माला में आने वाले हैं। घर बैठे ज्ञान में उछलते रहते हैं। गुप्त रहते हुए ज्ञान भी देते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं यह पवित्र प्रवृत्तिमार्ग स्थापन होता है संगम पर। वो रजोगुणी निवृत्तिमार्ग का सन्यास अलग है। उनसे मनुष्य स्वर्ग के सुख नहीं ले सकते। यह दुनिया कलियुग अन्त तक चलनी ही है। उस धर्म को तो सतो, रजो, तमो से पास होना है। तो यह समझाना चाहिए कि यह है पवित्र राजयोग और दुनिया में मनुष्य जो भी योग लगाते हैं वो अपवित्र। कोई समझते हैं मैं राजा हूँ। तो बुद्धियोग राजाई के साथ होगा। कोई का बुद्धियोग काठी पर से होगा तो उनको वो सीखेगा। हरेक बात में योग रहता है। मोची है तो अवश्य योग लगावेंगे, मोची हुनर सिखलाते हैं। तो उनका मोचका योग हो गया। यह हमारा फिर है प॰ के साथ योग, जिनसे हम राजयोग सीखते हैं। यह है सबसे ऊँच योग। और फिर साथ में उस्ताद की समझानी भी है। जिनसे जो सीखने जावेंगे तो अवश्य उनसे योग है...। उस्ताद से सीखते हैं तो उस्ताद का .....कमाई को याद करते हैं। फिर .....वो भी सीखते हैं। सभी का उस्ताद से योग है। हमारा योग है उस उस्ताद से जिसको गाइड, बाप, टीचर कहते हैं। जानते हैं वो बाबा अथवा साजन हमको लेने आया है। जो उनके बनते हैं उनको बाप, टीचर, गुरु रूप में शिक्षा देते हैं माया पर जीत पाने की। उन्होंने फिर दिखाया है श्री कृष्ण, अर्जुन का उस्ताद था। युद्ध के मैदान में अ(र्जुन) को इशारा देते थे; परन्तु वो हिंसा की बातें तो हैं नहीं। यहाँ तो कहते हैं मन्मनाभव– मुझे याद करो; क्योंकि मेरे पास आना है। फिर कहेंगे, धारणा करो तो मद्याजीभव। तो यह समझने की बातें हैं। ....लिखने का काम नहीं है। यह तो लिखते हैं कि जो सर्विस करने वाले हैं उन्हों को ताज़ा माल भेज दें। गर्म रोटी तवा टू माऊथ होती है ना! इसमें भी सन्मुख सुनने से सुख मिलता है। तो ताज़ा माल भेज देने से (बच्चों) को अच्छा लगता है। समझते हैं, शिवबाबा आकर ब्रह्मा द्वारा सुनाते हैं। बाबा कहते हैं, जैसे कर्म मैं क(रूँगा) मुझे देख हमारे बच्चे भी करते रहें। वो तो भक्तों को भी संभालते रहते और भक्ति का फल देते हैं। हमको ज्ञान से फल देते हैं 21 जन्म भविष्य सुख का। दाता तो वो है ना। भक्तिमार्ग में तो उन्हों को राज़ी करते आए हैं। इस समय भी उन्हों को राज़ी करता(ते) है। कितना दौड़ा–दौड़ी करते हैं। भक्तिमार्ग में भी अल्पकाल का सुख देते आए हैं। जिनको सा॰ होता है ..... भक्ति में तीखे होते होंगे। सा॰ कराकर भी फल (देता) है जो वो खुश हो जावे। तुमने शुरू से भक्ति की है तो अब बाबा उसका फल दे रहे हैं। कोई फल देने वाला, झोली भरने वाला है ना। दो बिगर तो काम न हो। एक द्वारा... हो फिर तो भक्ति चल नहीं सकती। भक्ति ज़रूर दूसरे की की जाती है। दूसरे की याद दिल में रखनी पड़ती है। भल कोई अपने को ..... समझे तो भी दूसरे से मिलने ..... (अधूरी मुरली)